

[Shri V. Narayanasamy]

and in the name of customs. This is a very serious thing People are suffering really. They leave their family for five or six years to earn their livelihood.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): The association is becoming longer...

SHRI V. NARAYANASAMY: Sir, this is a sensitive matter. This concerns thousands and thousands of people of this country who go abroad to earn their livelihood. This happens when they come back. Therefore, I would like to tell the Minister of State for Finance that in the name of customs and other things, they should not harass the passengers coming from abroad. The security people should not do this sort of a thing. I hope the Minister will take immediate steps to protect the people.

SHRI JOHN F. FERNANDES (Goa): I wully associate myself with my colleague. While associating I want to mention one thing. The Central Government should not dismiss this saying that this is a State matter. Airports come under the National Airports Authority, which is under the Central Government. This problem is pertinent to all the States. In my State foreign tourists lose their hard currency, dollars. When a complaint is lodged, nothing is done. There are complaints lodged by the Embassies in Delhi also. So, I want this Government to take up this matter very seriously. I would request the Civil Aviation Ministry to withdraw the State Police and have their own police, like the Railway security force.

SHRI BHUBANESWAR KALITA (Assam): While associating myself with the Special Mention made by our senior colleague, Shri N. E. Balaram, I would say that this is true of every airport. Not only in Bombay, but we have also our experience in Calcutta. Mr. Balaram has spoken about jewelleryes and Mr. Fernandes has spoken about Dollars, but at Calcutta Airport, even small things like Sarees and cigarette packets are not left out. A lady Officer, who was travelling from Calcutta to Gauhati, while in the security check was asked from where she got the Sarees. Some other passenger

was told why this much pack of cigarettes was there in his pocket. "That should not be there. Could I take out one?" This sort of harassment is there at every airport. We have our personal experiences at Calcutta Airport. So, I appeal to the authorities to take a serious note of it and make appropriate inquiries and correct the position.

SHRI SUKOMAL SEN (West Bengal): Sir, I also associate myself and support what has been said.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI M. A. BABY): I understand hon. Minister of State for Home, Shri Jacob, has discussed this matter with some of the MPs from Kerala. The Minister is also present here. This is not good for our country. I hope the Government will take appropriate action.

Move for Privatisation of N.J.M.C. Jute Mills

श्री मोहम्मद अमीन (पश्चिमी बंगाल): सर, मैं आपके जरिए से इस हाउस की ओर गवर्नमेंट की तबज्जह इस मामले की तरफ मजबूत कराना चाहता हूँ कि इस वक्त छह जूट मिलें हैं, जिनको सरकार चलाती है, जिसमें पांच पश्चिमी बंगाल में हैं और एक बिहार में है। यह बात सही है कि इन कारखानों में नुकसान हो रहा है और नुकसान हो यह कोई भी नहीं चाहेंगा। इस पर कुछ दिनों से बहस-व-मुबाहिसा जारी है।

अब अखबारों में यह खबर आ रही है कि सरकार इसको एक प्राइवेट इंडस्ट्री लिस्ट को एजेंट बनाकर उसकी निगरानी में चलाने की बात सोच रही है। इस खबर से मजदूरों में बहुत परेशानी फैल गई है। मैं सरकार से यह कहना चाहता हूँ कि इस किस्म के कोई कदम उठाने से पहले कारखानों की तमाम ट्रेड-यूनियनों के साथ बैठकर के इस पर बातचीत करने की जरूरत है।

यहां तक प्राइवेट सैक्टर का स्वागत है, उसका हाल तो और बुरा है। अभी मेरे पास एक रिपोर्ट है, जिसमें 15 कारखाने पूरे हिन्दुस्तान में बंद हैं और इन कारखानों के बंद होने की वजह

کہیں کچھہ پارٹ کا جیادہ داسم ہے اور دوسرا یہ ہے کہ ریس سے جو آرڈر آیا کرتا تھا جب سوویت یونین تھا وہ، اب وہاں پولیٹیکل سیٹویشن بدل جانے کے کارن، آرڈر نہیں آ رہا ہے یا بہت کم آ رہا ہے۔ پہلے ایک لاکھ ٹن اکیلے ریس جاتا تھا اور دو لاکھ ٹن سے جیادہ مرگنرلی گورنمنٹ خریدتی تھی اپنے دیش میں بوریادی کے لیے۔ لیکن، یہ اب سببب میں بات نہیں آ رہی ہے کہ ڈائریکٹر جنرل آف سٹورڈز انڈسٹریال نے آرڈر اتنا کم دیوں کر دیا ہے؟ وچ وچ، انگوں انڈیا، کینن، ریلیانس، اری ہنومان، کامرہڈی، فوٹوویلیس، آکسلنڈ، گونج، یہ نو جٹ میل پشیمی بنگال میں آج بد ہے، کوئی ایک سال سے، کوئی چھ مہینے سے، اور کوئی تین مہینے سے، تریپورا کا سرکاری کارخانہ تریپورا جٹ میل بھی بد ہے۔

آندھرا پردیش میں چیتیلستا اور تیلی-میلی جٹ میل ہے، یہ دو کارخانے بد ہیں۔ مڈھ پردیش میں موہن جٹ کمپنی جو راجگڑھ میں ہے، وہ بند ہے اور اتر پردیش میں کانپور میں کانپور جٹ اسیوگ ہے یہ کارخانہ بھی بد ہے۔ اس پرکار یہ 15 کارخانے ہیں۔ تو پراڈوٹ سیکٹر کے مالیکان دن کارخانوں کو اس چلا نہیں پا رہے ہیں۔ سرکاری کارخانے بھی اگر پراڈوٹ سیکٹر کے ہوالے کیے گئے اسے جیادہ ترقیان کی بات اور کوئی نہیں ہوگی۔ اس لیے یہاں پر متری جی موجود ہیں، وہ اگر ریکٹ کرے تو جیادہ بہتر ہوگا، کیونکہ، یہاں کے متریوں اور 40 لاکھ پاس کے کسانوں کی روتی اس کے باہر جڑی ہے۔

شری محمد امین "مغربی بنگال" سے
میں کاپ کے دریم سے اس ہاؤس کی
اور گورنمنٹ کی توجہ اس معاملہ کی طرف
مبذول کرنا چاہتا ہوں کہ اس وقت
چھ جٹ ملیں ہیں۔ جن کو سرکار چلاتی ہے
جس میں پانچ ایشیائی بنگال میں ہیں اور
ایک بہار میں ہے۔ یہ بات صحیح ہے کہ
ان کارخانوں میں نقصان ہو رہا ہے اور
نقصان ہو یہ کوئی نہیں چاہے گا۔ اس پر
کچھ دنوں سے بحث و مباحثہ جارہا ہے
اب اخباروں میں یہ خبر آ رہی
ہے کہ سرکار اس کو ایک پرائیویٹ ٹریڈنگ
کو ایجنٹ بنا کر اس کی نگرانی میں چلانے
کی بات سوچ رہی ہے۔ اس خبر سے
مزدوروں میں بہت پریشانی پھیل گئی ہے
میں سرکار سے یہ کہنا چاہتا ہوں کہ
اس قسم کے کوئی قدم اٹھانے سے پہلے
کارخانوں کی تمام ٹریڈ یونینوں کے ساتھ
بیٹھ کر اس پر بات چیت کرنے کی ضرورت ہے۔
جہاں تک پرائیویٹ سیکٹر کا سوال
ہے اس کا حال تو اور برا ہے۔ ابھی میرے
پاس ایک لسٹ ہے جس میں 50 کارخانے
ہوئے ہندوستان میں بند ہیں اور ان
کارخانوں کے بند ہونے کی وجہ کہیں
کچھ پارٹ کا زیادہ داسم ہے اور دوسرا

یہ ہے کہ روس سے جو آرڈر آیا کرتا تھا جب سوویت یونین تھا وہ اب واپس پریٹیکل سچو اسٹین بیل جانے کے کارن آرڈر نہیں آرہا ہے یا بہت کم آرہا ہے پہلے ایک لاکھ ٹن اکیلے روس جاتا تھا اور دو لاکھ ٹن سے زیادہ مرکزی حکومت خریدتی تھی اپنے دلش میں بورا بنی کیلئے لیکن یہ بھی سمجھ میں بات نہیں آرہی ہے کہ ڈائریکٹر جنرل آف سپلائی اینڈ ڈسٹری بیوٹ نے آرڈر اتنا کم کیوں کر دیا ہے۔ کج، کج اینگلو انڈیا کیسلون۔ ریلوے سٹیشن پر یہ کمریٹی فورٹ ولیم۔ اک لینڈ گنگسج۔ یہ نو جوٹ مل پشچی بنگال میں آج بند ہیں کوئی ایک سال سے کوئی سچر مہینے سے اور کوئی تین مہینے سے۔ تھاپورا کانسٹرکٹری کارخانہ تریپورہ جوٹ مل بھی بند ہے۔ آندھرا پردیش میں جیتی ولسا اور نیلمیرلا جوٹ مل ہیں یہ دو کارخانے بند ہیں۔ مدھیہ پردیش میں موہن جوٹ کمپنی بند رائے گڑھ میں ہے وہ بند ہے اور اتر پردیش میں کانپور میں کانپور جوٹ ادیلوگ ہے یہ کارخانہ بھی بند ہے اس پر کار یہ کارخانے ہیں تو پرائیویٹ سیکٹر کے مالکان ان کارخانوں کو چلا نہیں پا رہے ہیں۔ سرکاری کارخانے بھی اگر پرائیویٹ سیکٹر کے

حوالے کئے گئے تو اس سے زیادہ نقصان کی بات اور کوئی نہیں ہوگی۔ اس لئے یہاں پر منتری جی موجود ہیں وہ اگر ری ایکٹ کریں تو زیادہ بہتر ہوگا۔ کیوں کہ یہاں کے مزدوروں اور ہم لاکھ پاس کے کسانوں کی روزی اس کے ساتھ جڑی ہوئی ہے۔

SHRIMATI KAMLA SINHA: Sir, I also associate myself with his special mention.

श्री संघ प्रिय गौतम : मैं भी एसो-सिएट करता हूँ ।

श्री जगदीश प्रसाद साथर (उत्तर प्रदेश) महोदय, जूट के कारखानों का सवाल काफी गंभीर हो गया है। यह मेरे सहयोगी ने भी उठाया है। मैं इस मत का रहा हूँ और हमारी नीति है कि जो भी कारखाने बंद होने की स्थिति में हैं, चाहे वह सरकारी हों, चाहे वह निजी हों, उनको बंद करने से पहले वहाँ के जो मजदूर संगठन हैं, उनसे बात करके यदि वे तैयार हों तो उनके हाथों में सौंप देना चाहिए। मुझे याद है, पश्चिमी बंगाल में। एक बजे वज्र जूट मिल है और दूसरे का नाम याद नहीं आ रहा है, यह दोनों आज से कई साल पहले तक बिल्कुल घाटे में चल रही थी। मजदूरों ने उसको ले लिया और अब पिछले डेढ़-दो साल से मजदूरों ने उसको फायदे में चलाना शुरू कर दिया तथा वे चलीं उसमें उन लो ने अपने फंड में से पैसा दिया, आदि-आदि। अब मैं डिटेल्स में नहीं जाना चाहता, क्योंकि आप घंटी बजा देंगे। लेकिन मंटे सामने मुख्यतः दो कारखाने हैं—एंग्लो-इंडिया जूट मिल्स और दूसरी है—एकर्स जूट वर्क्स। यह दो कारखाने तो ऐसे हैं जो बंद होने की स्थिति में हैं। इनकी बी आई. एफ. आर. के हवाले किया गया है। लेकिन वहाँ के मजदूर बंगालियों ने मांग की है

कि यह हमारे हवाले की जानी चाहिए तथा जो पिछली उनकी देनदारियां हैं, उसकी भरपाई सरकार करे तथा उनके ऊपर जिम्मेदारी न डाले और साथ ही जो आपरेंटिंग एजेंट हैं उनको डायरेक्शन दे कि मजदूरों से बात करके फैसला करे। दूसरे, आई. डी. बी. आई की योजना है, जिनमें से वह सूद के बिना ऋण देते हैं। तो आई. डी. बी. आई. से इन लोगों को ऋण दिलाया जाना चाहिए। जैसा मैंने कहा, जो वज बंध जूट मिल्स है, उसका उदाहरण है कि जूट पैदा करने वाले जो लोग हैं, उन्होंने भी उनको एववांस पैसा दिया और उसमें से उन्होंने जो तैयार माल था, वह लिया है। तो बहुत से इस प्रकार के माध्यम निकल सकते हैं। जिन दो मिलों का नाम मैंने लिया है—एंग्लो-इंडिया जूट मिल्स और एंक्स जूट वर्क्स, मजदूर इस बात पर राजी हैं कि वे अपने फंड में से 50 परसेंट पैसा देकर, वे 50 परसेंट शेयर्स ले लेंगे। खास तौर से इन दो कारखानों का और जैसा मेरे सहयोगी ने भी कहा, उनको भी इस प्रकार से देखा जाए। यह मैं जानता हूँ कि मजदूर संगठन ऐसे हैं, जो कि मजदूरों के हाथ में कारखाना देने के पक्ष में नहीं हैं। लेकिन बहुत से संगठन ऐसे हैं जिन्होंने करके दिखाया है। तो मेरा आपके माध्यम से सरकार से आग्रह है कि इस नीति में परिवर्तन लाए और खास तौर से जो पहले चल रहे हैं और जिन दो कारखानों का उल्लेख किया है, इनको तो मजदूरों के हाथ में दिया जाना ही चाहिए।

श्री मोहम्मद सलील (पश्चिम बंगाल)

उपसभाध्यक्ष जी, यह बहुत गंभीर मामला है और मंत्री जी यहां मौजूद हैं। सदन में जब भी कोई महत्वपूर्ण सवाल उठाया जाता है, आखिर वह किस लिए? एन. जे. एम. सी. की 6 मिलों को निजी मालिकान का बेचना का सवाल था। जब वह नहीं कर पाए तो आज एन. जे. एम. सी., उन 6 मिल के जितने प्रोडक्ट्स हैं, उनको पानी की कीमत में बेचने के लिए एक निजी मालिक को सोल सैलिंग एजेंट बना दिया है। 6 सरकारी

मिल प्रोडक्ट्स, एक जूट मिल के निजी मालिक खरीद कर बैठेंगे। नफा जो होगा, मुनाफा जो होगा, वह निजी मालिक को मिलेगा और एन. जे. एम. सी. में जो मिल्स हैं, सरकार यह कहेगी कि यह तो बाटे में चल रहे हैं। मंत्री महोदय, यह कहें, यह एश्यूरेस दें कि किसी निजी मालिक को सोल सैलिंग एजेंट नहीं बनायेंगे। कोई निजी कारखाने में भी जूट मिल में कोई सोल सैलिंग एजेंट नहीं होता। चूँकि जूट मिल जो प्रोडक्ट्स वह आर्डर के मुताबिक बनाया जाता है, तो फिर उसको सैलिंग एजेंट बनाने की क्या जरूरत है।

منترى محمد سليم مغربي بنگال: آپ
محکمہ انسٹیکشن جی۔ یہ بہت گنجیمہ معاملہ
ہے اور منترى جی یہاں موجود ہیں۔ سدن میں
جب یہ بات۔ مہتورپورن سوال اٹھایا جاتا
ہے۔ آخر کس لئے این۔ جے۔ ایم۔ سی کی
۶ ملوں کو نجی مالکان کو بیچنے کا سوال تھا
جب وہ نہیں کر پاتے تو آج این۔ جے۔
ایم۔ سی۔ ان ۶ ملوں کے جتنے پروڈکٹس
ہیں ان کو پانی کی قیمت میں ایک نجی مالک
کو بیچ کر سول سیلنگ ایجنٹ بنا دیا ہے۔ ۶ مل
کے پروڈکٹس ایک جوٹ مل کے مالک
نجی مالک کو خرید کر بیچیں گے۔ نفع جو
ہوگا۔ منافع جو ہوگا۔ وہ نجی مالک کو ملے گا
اور این۔ جے۔ ایم۔ سی میں جو ملیں ہیں
سرکار یہ کہے گی کہ یہ تو گھاٹے میں چل
رہے ہیں۔ منترى مہر دے یہ کہیں۔ یہ
انسٹورس دیں کہ کسی نجی مالک کو

سول سینگ ایجنٹ نہیں بنائیں گے۔
کوئی نجی کارخانے میں بھی جوٹ مل میں
کوئی سول سینگ ایجنٹ نہیں ہوتا چونکہ
جوٹ مل کا جوہر ڈکٹس ہے وہ ارد گرد
کے مطابق بنایا جاتا ہے تو پھر اس کو
سینگ ایجنٹ بنانے کی کیا ضرورت ہے

श्री जगदीश प्रसाद माथूर : (उत्तर प्रदेश) श्रीमान, यह सब पार्टियों की मांग है। कम्युनिस्ट पार्टी भी एक कोने पर, हम भी एक कोने पर है। ऐसी मामला, मजदूरों का हित इसमें है तो कारखानेदारों को मुनाफा कमाकर देने के बजाय मजदूरों को उसका फायदा देना चाहिए।

Growing influence of militants in Jammu and Kashmir

DR. NAUNIHAL SINGH (Uttar Pradesh): Mr. Vice-Chairman, Sir, I visited the State of Jammu and Kashmir with two other Members of the Lok Sabha on the 14th, 15th and 16th of August. A very serious situation has arisen in that State due to the faulty policies of the Central Government on a continuing basis. Infiltrators are pouring into Jammu and Kashmir from Pakistan. The population of the State of Jammu and Kashmir is increasing with these infiltrators. Innocent and loyal people like Gujar Muslims are being beaten and killed. On 27-6-1992, a Gujar boy from Village Chalhas, District Rajouri, was beaten and killed and even his dead body was not returned to his parents. As a result of the torture of Gujar Muslims, not less than 400 families have crossed the border into Pakistan. Over 100 girls from the area of Surankote have slipped into Pakistan for training. Eighty per cent of the police force is under the influence of the militants. If any infiltrator is caught by the military, he is handed over to the police and the police, after a brief enquiry, let him off. This is how infiltrators are let off.

Further, there is another alarming situation in the State. The State Govern-

ment is financing certain newspapers which print anti-India material and encourage militancy. I have collected those papers. These are Urdu papers. Anybody can read them. The papers are "Alsafa", "Srinagar Times", "Aftab", "Vadi-ki-Awaz" and "Khidmat Press". The provincial financial corporation has advanced loans to the extent of one crore and thirty-seven lakhs of rupees to the first four papers. The fifth paper, "Khidmat Press", got Rs. 80 lakhs. They are publishing anti-India material and are encouraging insurgency.

Another alarming situation is that the PTT/UNI agencies are now manned by those people who have been appointed with the recommendation of the militants. So wrong news are being given to the various newspapers. The foreign media is represented by no less than 172 persons as against two persons in 1947, all accredited and given all the facilities Mr. Doraiswamy got released on 21st August. It came in newspapers on 26th August. It is reliably learnt that not less than Rs. 10 lakhs was paid to the militants for the release; in addition, Rs. 1 lakh was paid to these papers only to print an advertisement saying, on behalf of the militants, "Thanks" and "Shukriya." This is surprising. And, all this amount is recorded in the Indian Oil Corporation records.

Lastly, Sir, Dr. Farooq Abdullah, in a recent statement, which is very damaging, has added fuel to fire. It should be viewed by the Government with all the seriousness as it is anti-India and amounts to betrayal of the trust of the people and the nation.

All these constitute an explosive situation in the State of Jammu and Kashmir and heard the darkest clouds over the horizon of the State and the nation as a whole. And, a ground seems to have been prepared for an attack by Pakistan. Through you, Sir, I warn the Government for preparedness, full preparedness. They should prepare themselves more than 100 per cent to defend themselves and, if necessary, destroy the training centres for Militants in Pakistan to protect the people of the country. Thank you.